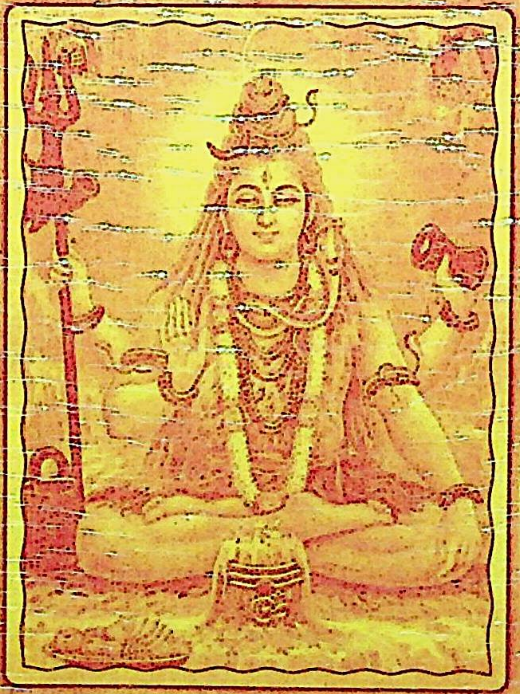
काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा - दर्शन पूजन यात्रा



काशी विश्वनाथ जी

● काशी साहित्य लेखक, अनुसंधानकर्ता एवं प्रकाशक : दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती
● सहायतार्थ : रु. ५/- मात्र

● प्रथम आवृत्ति पाँच हजार प्रति : माघ कृष्ण अमावस्या, संवत् २०६४, दिनांक : ८/२/०८
● द्वितीय आवृत्ति पाँच हजार प्रति : ज्येष्ठ शुक्ल, निर्जला एकादशी, दिनांक : जून १४/६/०८
● अक्षर संयोजन : चित्रा प्रिंटर्स, अस्सी, वाराणसी
● मुद्रक : कावेरा आफसेट, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी

सूचना : १. "काशी की वृहद् चौरासी कोस यात्रा" पुस्तक का लोकार्पण वाराणसी के मण्डलायुक्त श्री नितिन रमेश गोकर्ण जी महोदय ने दिनांक २४-२-०८ को अपराह्न ३ बजे पत्रकार संघ, पराड़कर स्मृति भवन, गोलघर, वाराणसी में किया।

सूचना : २. काशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा समिति दर्शनार्थी सभी मंदिरों का दर्शन-पूजन करते हुए परिक्रमा दर्शन यात्रा करें।

श्री काशी वृहद् चौरासी कोस दर्शन पूजन यात्रा

दिनांक ८/३/२००८ से दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी ने चौरासी कोस यात्रा का शुभारम्भ किया। मध्यमेश्वर, दण्डपाणी, अन्नपूर्णा तथा विश्वनाथ जी का दर्शन करके एवं ज्ञानवापी में संकल्प लेकर, आदि-विश्वेश्वर मंदिर का एवं गणेशजी का दर्शन-पूजन करके फूलमण्डी से टाटा सूमो आदि वाहन में बैठकर या पैदल 'हर-हर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे' कीर्तन करते हुए यात्री चलते हैं।

८.३.२००८ से आज तक यह यात्रा पुण्यात्मा एवं धर्मात्मा यात्रियों द्वारा सज्जनतापूर्वक चल रही है।

१. चौरासी कोस परिक्रमा की प्रथम यात्रा दिनांक ८/३/२००८ को स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी ने अपने भक्तों के साथ सम्पन्न किया।

२. द्वितीय यात्रा का शुभारम्भ स्वामी जी ने दिनांक २८/३/२००८ को किया, जिसमें मद्रास के लगभग पचास (५०) तीर्थयात्रियों ने संचालक श्री अनिल पाण्डेजी के साथ यात्रा सम्पन्न की।

३. तृतीय यात्रा का शुभारम्भ स्वामीजी ने दिनांक ४/४/२००८ को किया, जिसमें केरल प्रांत के एकतालिस (४१) यात्री थे।

४. चतुर्थ यात्रा में संचालक श्री अनिल शास्त्री के साथ दिनांक २०/४/२००८ को सुबह सात (७) बजे कर्नाटक के रहने वाले लगभग पचपन यात्री गये, जिसका उद्घाटन स्वामीजी के हाथों से हुआ। यात्रा मण्डली ने पाँच (५) वाहनों की सहायता से यात्रा पूर्ण की।

५. पञ्चम यात्रा दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वतीजी ने शुभारम्भ किया। यह यात्रा संचालक -

॥ श्री गणेशाय नमः॥

काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा-दर्शन पूजन यात्रा



अनुसंधानकर्त्ता :

अभिनव ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानयोगी सिद्धसन्त अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के कृपापात्र शिष्य ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थ सिद्धसन्त

अनन्त श्री विभूषित दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

काशी के तीर्थ, मठ, अन्न क्षेत्र, मंदिर के तथा काशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा समिति के एवं जनकल्याण समिति के संस्थापक एवं अध्यक्ष

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, काशी (वाराणसी)

धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज के कृपापात्र शिष्य दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड ने अपने अथक् परिश्रम के बल पर काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा की खोज की है। रूद्रप्रताप गौतमजी ने अपनी पुस्तक "काशी यात्रा" में लिखा है कि मुगल शासकों की प्रतिशोधपूर्ण नीति के कारण लुप्त हुई अनेक धार्मिक यात्राओं के साथ यह परिक्रमा यात्रा भी लगभग पांच सौ वर्ष पहले बंद हो गई थी। फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन शनिवार दिनांक 8 मार्च 2008 ई. को प्रातः 8 बजे अन्नपूर्णा एवं काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करके ज्ञानवापी से संकल्प लेकर चौरासी कोस परिक्रमा पैदल दर्शन-पूजन यात्रा का शुभारम्भ ***दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी*** करेंगे। जिसमें साधू-संत, महात्मा, जनता-जनार्दन एवं भक्तगण अधिक-से-अधिक संख्या में स्वामी जी के साथ काशी की चौरासी कोस परिक्रमा की यात्रा कर सकते हैं और परिक्रमा यात्रा का मन, वाणी से प्रचार-प्रसार तथा सहयोग कर अक्षय पुण्य की प्राप्ति करें।

काशी की चौरासी कोश परिक्रमा यात्रा करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप और रोग नष्ट होकर पुण्य का उदय होता है। गरीबी, दुःख, संकट, कलह तथा रोग नष्ट होते हैं। सुख-शान्ति, धन-सम्पत्ति एवं यश-प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त होता है। शत्रु मित्र हो जाते हैं, गरीब धनी हो जाते हैं तथा रोगी निरोगी हो जाते हैं।

काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन यात्रा श्रीकरपात्री जी महाराज के शिष्य दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रातः 8 बजे ज्ञानवापी से अपने भक्तों के साथ चौरासी कोश की यात्रा प्रारम्भ करेंगे। इस यात्रा के विषय की विस्तृत जानकारी हेतु "काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन यात्रा माहात्म्य" नामक पुस्तक के आज्ञानुसार प्रत्येक पड़ाव में पहुंचकर पूजा एवं सत्संग करना चाहिए। इस यात्रा के दौरान प्रतिदिन प्रवचन, कीर्तन एवं सत्संग होता है, जिसमें गाँव के और पड़ाव के लोगों को भी भाग लेना अनिवार्य है। यात्रियों के पड़ाव में पहुँचने पर वहाँ के लोगों

से अनुरोध है कि वे यात्रियों का स्वागत करें और रहने एवं भोजन आदि की व्यवस्था में सहयोग देवें।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने इस यात्रा को पुनः प्रारम्भ करने हेतु अथक् परिश्रम किया है तथा इन्होंने यात्रा की खोज के दौरान यात्रा के माहात्म्य एवं इसकी उपयोगिता तथा इसके इतिहास के विषय में हजारों पत्रिका छपवाकर इसका वितरण किया साथ-ही स्थान-स्थान पर जाकर वहाँ के लोगों से मिलकर उन्हें इस बात के लिए तैयार किया कि जब भविष्य में यात्रीगण वहां दर्शन हेतु यात्रा में आयेंगे तो गांव की जनता उनके रहन-सहन की जिम्मेवारी उठाये एवं सुरक्षा और सहयोग करें।

यात्रियों के मदद का परिणाम : यह बात सत्य एवं शास्त्र प्रमाणित भी है कि यदि कोई भगवान् के मंदिर में जा रहा हो और उसे मंदिर का पता न मालूम हो तो रास्ता बताने वाले को महापुण्य होता है। तब यह चिन्तन करने योग्य बात है कि इस महान् यात्रा के यात्रियों की जो भी मदद करेगा उसका पुण्य अतुलनीय होगा।

यात्रा से स्थानीय लोगों को भी लाभः यात्रियों के आवागमन से स्थानीय लोगों को भी लाभ होगा। जैसे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। दूकान, कारखाना आदि खोलने से कई परिवारों को भला होगा एवं उन दुकानों में अन्य लोगों को नौकरी तथा लाखों को रोजगार मिलेगा। किसी भी यात्री को किसी प्रकार का कष्ट न हो। प्रत्येक पड़ाव के प्रधान एवं थानाध्यक्ष एक दिन पहले पड़ाव में जाकर व्यवस्था देखेंगे। दूसरे दिन यात्रियों की सुरक्षा के लिए दिन में 10 बजे से दूसरे दिन 6 बजे तक पुलिसमैन की ड्यूटी लगा दें।

नोट : काशी की वृहद चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा माहात्म्य नामक पुस्तक छप रही है। पुस्तक को देखकर प्रत्येक पड़ाव में क्या-क्या कार्य करना है– इसकी जानकारी प्राप्त करें।

सूचना-चौरासी कोस यात्रा के देवी-देवताओं का दर्शन करने के लिए बांसफाटक के फूलमण्डी से तीसरे दिन 25.01.2009ई. से प्रातः 6 बजे टाटा सूमो की गाड़ी

जायेगी। बलुवाघाट एवं चुनारघाट में पक्का पुल बन रहा है। 10.02.2011ई.के महाशिवरात्रि के दिन में मीनी बस गोलगड्डा से काशी की चौरासी कोश परिक्रमा के मार्ग में यात्रा करने वाले को लेकर प्रत्येक तीसरे दिन चलेगी।

चौरासी कोश यात्रा करने वाले काशी विश्वनाथ जी के श्रद्धालु भक्त महाशिवरात्रि के दिन प्रतिवर्ष काशी में आकर गंगास्नान करके संध्या कर मंदिरों का दर्शन कर "ॐ नमः शिवाय" महामंन्त्र का जप करें तत्पश्चात् कीर्तन, भजन, जप करते हुए रात्रि में जागरण करें। दूसरे दिन गंगास्नान करके व्रत का पारायण करके उपर्युक्त बताये गये फूलमण्डी वाले स्थान पर यथा समय दिन के 10 बजे बांसफाटक सत्यनारायण मंदिर के सामने फूलमण्डी में पहुंच जायें। वहां से काशी विश्वनाथ नित्य यात्रा "हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे" कीर्तन करते हुए मणिकर्णिका घाट में स्नान, दर्शन कर नित्य यात्रा पूर्ण करके अपने-अपने स्थान मठ, मंदिर, आश्रम एवं घर में जाकर भोजन करने के पश्चात् काशी की वृहद

चौरासी कोस परिक्रमा में ले जाने हेतु अति आवश्यक सामान साथ ले लें।

दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रतिवर्ष की भाँति दिनांक 8.03.2008 ई. शनिवार को प्रातः आठ बजे विश्वनाथ आदि के दर्शन करके ज्ञानवापी में नन्दी एवं कुँआ के पास व्यास गद्दी में बैठकर संकल्प लेकर कीर्तन करते हुए ज्ञानवापी से मणिकर्णिका पहुंचें (जो लोग व्यास गद्दी में संकल्प लेने में असमर्थ हों वे लोग मणिकर्णिका में संकल्प ले सकते हैं) तथा वहाँ से पञ्चगंगा से नौका द्वारा गंगा पार करके डुमरी गांव जी.टी. रोड को पार कर पगडंडी रास्ते से सेमरा से उत्तर बगल में सड़क से बखरा, व्यासपुर होते हुए **वेदव्यासनगर, चांदी, तारागांव, जिला चन्दौली पहुँचेंगे, यहीं प्रथम पड़ाव है।** ज्ञातव्य है कि ये सभी पड़ाव प्राचीन हैं। **व्यासकुण्डकूप तीर्थाय नमः, व्यासगणेशाय नमः, वेदव्यासेश्वराय नमः, सरस्वतीदेव्यै नमः।** यहां पहुंचकर दर्शन-पूजन आदि कर के मंदिर में पेड़ के नीचे विद्यालय में और धर्मशाला में जहां स्थान मिले

वहाँ ठहरकर जलपान-भोजनादि करें। 3 बजे से सतसंग, कीर्तन, प्रवचन श्रवण कर विश्राम करें। फिर दूसरे दिन प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्नान, संध्या आदि करके मंदिर में जाकर पूजा करके दूसरे पड़ाव विष्णुधाम-वैकुण्ठपुर जाने के लिए यात्रा प्रारम्भ करें। रामबाग में दुर्गाजी के दर्शन करके लंका जी.टी. रोड पार कर रतनबाग में बालात्रिपुरसुन्दरी देवी के दर्शन-पूजन करें, रामनगर उद्योग कारखाना जीवनाथपुर, पटनवां, गोपालपुर,भवानीपुर, नारायणपुर होते हुए वैकुण्ठपुर, मिर्जापुर में दूसरा पड़ाव विष्णुधाम है। वैकुण्ठतीर्थ कुण्डकूप तीर्थाय नमः, वैकुण्ठेश्वराय नमः, कात्यायनी दुर्गादेव्यै नमः, विष्णुश्वराय नमः, शालटंक विनायकाय नमः। वहाँ दर्शन -पूजन, भोजनादि सत्संग करके यात्रीगण विश्राम करें।

दूसरे दिन प्रातः वैकुण्ठपुर से शिवशंकरी धाम में दर्शन कर, कैलहट जमुईं बाजार, पॉवरहाउस के पश्चिम इन्दिरा कॉलेज होते हुए आचार्य जी के मंदिर में तीसरा पड़ाव वल्लभाचार्यधाम है। गोपालकुण्डकूप तीर्थाय नमः,

यहाँ पर वल्लभाचार्य जी का गद्दी है। मंदिर के नीचे से दर्शन करें। यहाँ धर्मशाला में रहें। यहाँ पर पूर्ववत् सत्संग एवं सब कार्य कर रात्रि में निवास करें। दूसरे दिन चुनारघाट होते हुए खानपुर, पाहो गांव होते हुए कछवां बाजार में दाहिनी तरफ पोखरा और **हनुमान जी के मंदिर में चौथा पड़ाव हनुमानधाम है। हनुमते नमः, हनुमतेश्वराय नमः, अंजनी दुर्गा देव्यै नमः, श्री गणेशाय नमः** यथा समय यहाँ भी पूर्व की भांति नियमों का पालन करें। तीन बजे से कथा-कीर्तन सत्संग करके विश्राम करें। पुनः अगली सुबह हनुमानधाम से कछवां रोड, कपसेठी कालिका बाड़ा होते हुए **कालिकाधाम में पाँचवां पड़ाव है। महाचण्डी कालिका तीर्थाय नमः** (यहां कुआँ एवं कुण्ड विद्यमान हैं), **महाचण्डी कालिका देव्यै नमः, कालरात्रेश्वराय नमः, मंगलविनायकाय नमः, अरुणादित्याय नमः, चण्डभैरवाय नमः** (कालिका बाड़ा) यहाँ भी पूर्ववत् सब कार्य करें। कीर्तन, भजन, सत्संग करते हुए उस दिन रात्रि निवास करते हैं। दूसरे दिन

अनेई, यज्ञशाला होते हुए नकटी सिद्धेश्वरी भवानी पहुंचें यह छठवां पड़ाव है। नकटी सिद्धेश्वरी भवानी तीर्थाय नमः, सिद्धेश्वराय नमः, नकटी सिद्धेश्वरी भवानी देव्यै नमः, सिद्धिविनायकाय नमः, बटुक भैरवाय नमः, त्रिलोचनेश्वराय नमः यहां भी सारे कार्यक्रम पहले की तरह करते हुए सत्संग कर रात्रि विश्राम करना चाहिए।

इसके पश्चात् दूसरे दिन देवथूहा चेहरा, विन्दा सूरही गांव खालिशपुर, रेलवे फाटक, चारा फैक्ट्री के दक्षिण बगल से सिन्धौरा बाजार रामबाबा आश्रम में इण्टर कॉलेज के पास सिद्ध हनुमान मंदिर में पशुपति धाम सातवां पड़ाव है। हनुमते नमः, नर्मदेश्वराय नमः, हनुमदेश्वराय नमः, यक्षविनायकाय नमः यहां भी पूर्ववत् कार्य करें। स्नान, दर्शन, भोजन करके, कीर्तन, सत्संग करके विश्राम करें।

दूसरे दिन प्रातः सिन्धौरा से भरतपुर, जगदीशपुर वेला होते हुए हरिहरपुर करपात्रीनगर में आठवां पड़ाव

है। हरिहरेश्वराय नमः, द्विमुख विनायकाय नमः, भुवनेश्वरी दुर्गा देव्यै नमः यहां भी स्नान करके हरिहरेश्वर का दर्शन-पूजन कर पूर्ववत् कार्य करें। जलपान-भोजन करने के पश्चात् कीर्तन-सत्संग करते हुए विश्राम करें।

अगले दिन प्रातः हरिहरपुर से धरहरा, राजबाड़ी, मार्कण्डेय महादेव होते हुए गंगा के किनारे राममंदिर मार्कण्डेश्वर धाम में नौवां पड़ाव है। सुमन्तेश्वराय नमः, मार्कण्डेश्वराय नमः, एकमुख विनायकाय नमः, दुर्गा देव्यै नमः यहाँ भी गंगा-स्नान, संध्या,दर्शन-पूजन करके भोजन करने के पश्चात् कीर्तन सत्संग कर विश्राम होगा।

पुनः अगली सुबह नौका द्वारा गंगापार करके टाण्डा, नाथूपुर, मजदहा लक्ष्मणगढ़ में लच्छू बाबा के दर्शन करके चलें। मंदिर से दक्षिण बगल से पूर्व, नारद गांव, परासी नहर, मोहरगंज, प्रभुपुर होते हुए सकलडीहां पोखरा महेश्वर शंकर जी के मंदिर में दसवाँ पड़ाव आदिशंकराचार्य धाम है। महेश्वर तीर्थाय नमः,

महेश्वराय नमः, माहेश्वरी दुर्गादेव्यै नमः, उन्मत्तभैरवाय नमः, महाकालेश्वराय नमः, यहाँ भी दर्शन करके पूर्ववर्ति विधिवत् सब कार्य करते हुए सत्संग कर रात्रि विश्राम करें।

अगले दिन सकलडीहां से अलीनगर जाने वाली सड़क से कुचवन रेलवे फाटक पार करके इण्डियन ऑयल अलीनगर जी.टी. रोड पार करके चकिया जाने वाली सड़क से गोधना त्रिमुहानी से गोधना गांव होते हुए गौरी गांव **अमरनाथधाम नागेश्वरजी के मंदिर में ग्यारहवाँ पड़ाव है। अमरनाथतीर्थाय नमः** (यहाँ मानसरोवर पोखरा और कुँआ है), **नागेश्वराय नमः, अमरनाथेश्वराय नमः, गौरीदुर्गा देव्यै नमः, हेरम्भविनायकाय नमः** यात्रीगण पड़ाव में पहुंचकर स्नान, संध्या, दर्शन, पूजन पूर्ववत् सब कार्य करके उस दिन प्रवचन, सत्संग करते हुए विश्राम करें।

दूसरे दिन जीवनाथपुर होते हुए रतनबाग में बाला त्रिपुरसुन्दरी मंदिर का पुनः दर्शन करें। यह मंदिर

चौरासी कोश यात्रा का केन्द्र बिन्दु है। जाते समय एवं आते समय मंदिर का दर्शन करके चलें। रतनबाग से रामनगर किला होते हुए सामने घाट नगवाँ एवं असी से दो मार्ग हैं। एक असीघाट से घाट होते हुए एवं दूसरा गली-गली से केदारेश्वर होते हुए दशाश्वमेध सड़क से विश्वनाथ गली में साक्षी विनायक के दर्शन करके अन्नपूर्णा विश्वनाथ आदि के दर्शन करके ज्ञानवापी में नन्दी के पास व्यास गद्दी पर संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा दे कर यात्रीगण काशी के चौरासी कोश के देवी-देवताओं के स्मरण करते हुए यात्री अपने-अपने आश्रम, मठ, मंदिर और घर को जाते हैं। घर पहुंचने के दूसरे दिन या तीसरे दिन तीन घंटे का कीर्तन एवं सुन्दरकांड का पाठ करें अथवा हनुमान चालीसा, सत्यनारायण व्रतकथा श्रवण, हवन आदि करके साधू एवं ब्राह्मण, कन्या को यथाशक्ति भोजन करायें और सकुटुंब भोजन करें। चौरासी कोश परिक्रमा यात्रा करने वाले को काशी विश्वनाथ जी अपनी भक्ति देते हैं। मन, बुद्धि भक्तिमय हो जाता है। अपने-अपने ईष्टदेव के मन्त्र

का नाम निरन्तर जप करने लगता है और भगवान् के भजन में ही मग्न रहता है और धन-धान्य, सुख-शान्ति प्राप्त करता है, उसका दोनों लोक सुधर जाता है।

काशी की धर्मप्राण जनता एवं प्रशासनिक व्यवस्था के तहत सांसदों, विधायकों एवं सामर्थ्यवान लोगों से निवेदन हैं कि आप सभी लोग काशी की विभिन्न यात्राओं के अन्तर्गत आने वाले मठ-मंदिरों एवं धर्मशाला, कुण्ड के प्राचीन स्वरूप को संरक्षण देते हुए जीर्णोद्धार करावें।

नोट : माघ शुक्ल वसंत पंचमी के दिन 12 बजे से 2 बजे के बीच में दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव समारोह को राममंदिर, धर्मसंघ के प्रांगण में मनाया जायेगा।

प्रतिवर्ष की भाँति श्री स्वामी जी काशी की पंचक्रोशी परिक्रमा यात्रा कार्तिक कृष्ण पंचमी तिथि को प्रातः 8 बजे ज्ञानवापी में संकल्प लेकर प्रस्थान करते हैं जो अनन्त श्री विभूषित स्वामी करपात्री जी की प्रेरणा एवं ईष्टदेव की आज्ञा से अनवरत अखण्ड रूप से चल रही है।

●●

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा रचित पुस्तकें—

हिमालय प्रेस में छपी पुस्तकों का नाम– (1) काशी की महिमा, (2) काशी मोक्ष निर्णय, (3) काशी का इतिहास, (4) वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा (5) पञ्चकोशी यात्रा, (6) काशी दर्शन, (7) काश्या मरणान्मुक्ति, (8) सिद्ध संतों का चमत्कार, (9) काशी में सिद्ध शिवलिंगों का चमत्कार, (10) काशी में सोमवार से रविवार तक के वार यात्रा, (11) काशी का लघु महात्म्य, (12) काशी की वार्षिक यात्रा, (13) राम नाम महिमा, (14) एक दिव्य जीवन दर्शन, (15) काशी की पञ्चकोशी यात्रा महात्म्य, (16) काशी में प्रत्येक तिथि के दिन एक वर्ष तक नेम से दर्शन यात्रा माहात्म्य, (17) धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के यज्ञ का चमत्कार और जीवन दर्शन, (18) काशी महात्म्य– श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। स्वामीजी द्वारा रचित पुस्तकों के बने हुए निगेटिव प्रेस में हैं। (19) काशी गौरव–भार्गव आफ्सेट्स–मच्छेदरी, वाराणसी, (20) वाराणसी महात्म्य, (21) वाराणसी बड़ी अन्तर्गृही नगर परिक्रमा, आनन्दकानन प्रेस, टेढ़ीनीम, वाराणसी, (22) काशी दिव्य दर्शन, (23) काशी का महात्म्य, (24) काशी मुक्ति महात्म्य, काबरा आफ्सेट्स प्रेस, रवीन्द्रपुरी कॉलोनी, वाराणसी, (25) कामधेनु कलि काशी पञ्चकोशी महात्म्य, आनन्द कानन प्रेस, टेढ़ीनीम, वाराणसी, (26) लोलार्क कुण्ड दर्शन स्नान महिमा, (27) काशी की

चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा दर्शन पूजन महात्म्य–काबरा आफसेट्स, रवीन्द्रपुरी कॉलोनी, वाराणसी में छपी थी।

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें–

(28) काशी रहस्य भाषा टीका हिन्दी, (29) शिवरहस्य हिन्दी भाषा टीका, (30) काशी गङ्गा दर्शन, (31) स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती करापात्री जी महाराज का जीवन दर्शन, (32) काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन यात्रा महात्म्य (33) काशी दर्शन (दूसरा भाग), (34) काशी का इतिहास, (35) काशी के सिद्ध संतों का चमत्कार, (36) देवपूजा विधि, (37) काशी प्रकाश।

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की रचित पुस्तकों का प्राप्ति स्थान– ❶ धर्मसंघ, दुर्गा कुण्ड, वाराणसी, ❷ करपात्री धाम, केदारघाट, वाराणसी ❸ काशी विश्वेश्वर जी का व्यक्तिगत मंदिर, मीरघाट, वाराणसी।

नोट : वर्तमान में काशी के धर्मसंघ में गौशाला और छात्रों को छात्रावास एवं भोजन निःशुल्क दिया जाता है। धर्मसंघ के अध्यक्ष श्री शंकरदेव चैतन्य ब्रह्मचारी जी ने विशाल सत्संग भवन बनाया है। काशी विश्वनाथ जी के भक्तों के लिए पूजा, पाठ, जप-यज्ञ तथा श्रीमद्भागवत्, शिवपुराण आदि कथा प्रवचन के लिए सत्संग भवन उपलब्ध है। यहाँ पर प्रायः कथा एवं प्रवचन के आयोजन होते रहते हैं।

❊❊❊

नित्यानन्द शास्त्री के नेतृत्व में दिनांक ४/५/२००८ को संपन्न हुई, जिसमें पैंतीस तीर्थयात्री तीन (३) वाहनों के साथ गये। यह यात्री लक्षदीप, बंगाल के रहने वाले थे।

६. षष्टम यात्रा दिनांक २०/५/०८ को श्री अनिलजी (इन्जीनियर) ने लगभग बाइस (२२) तीर्थयात्रियों व दो (२) वाहन के साथ पूर्ण की।

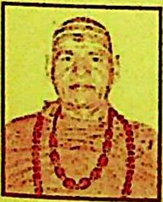
७. सप्तम यात्रा का उद्‌घाटन स्वामीजी ने दिनांक २५/०५/२००८ को ६ बजे ज्ञानवापी से किया, जिसमें विराट नगर, नेपाल निवासी श्री शिव प्रसाद खदाल जी पैंतीस (३५) तीर्थयात्रियों व तीन वाहन को अपने साथ ले गये।

८. अष्टम यात्रा दिनांक ३०/०५/२००८ को प्रातः सात बजे से ज्ञानवापी से प्रारम्भ हुई और उसी दिन सायं ६ बजे पूर्ण हुई। तीर्थयात्री शम्भू नाथ तिवारी, एस.के. सिंह, हरि प्रसाद चौबे व संजय यादव समेत अन्य लोगों ने मोटरसाइकिल द्वारा चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा को एक दिन में पूर्ण किया। सायं ज्ञानवापी में संकल्प छोड़कर वे घर को वापस हुए।

९. पर्यटन विभाग, कैण्ट, वाराणसी के सहयोग से दिनांक २१/८/२००८ को लन्दन निवासी श्री केण्टेन जी के नेतृत्व में इक्कीस (२१) तीर्थयात्रियों ने दो (२) वाहनों की सहायता से चौरासी कोस यात्रा संपन्न की।

साधु, सन्त, महात्मा और भक्तगणों द्वारा समय-समय पर चौरासी कोस की यात्रा सम्पन्न होती रहती है। चातुर्मास के पश्चात् यात्रा पुनः प्रारम्भ होगी।

श्री काशी वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा दर्शन-पूजन यात्रा में गये हुए तीर्थयात्रियों का स्वामीजी से कहना है कि चौरासी कोस यात्रा करने से सर्वमनोकामना पूर्ण होने का आभास होता है।



आशीर्वाद — काशी की वृहद् चौरासी कोस परिक्रमा यात्रा की खोज करने में अनेक भक्तों ने सहयोग किया। आप और आपका परिवार निरोग एवं स्वस्थ रहें। आपके घर में सुख-शांति बनी रहे। आपके कार्य-व्यापार में दिन-प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हो। आपके परिवार के सभी सदस्यों में एकता बनी रहे।

परस्पर प्रेम की बढ़ोत्तरी हो सम्मान-प्रतिष्ठा का विस्तार हो। पुत्र-पौत्र सभी आज्ञाकारी हों। सब में भगवत् भक्ति का विकास हो, यही हमारा आशीर्वाद है।

भक्तों के सहयोग के लिए मैं भगवान काशी विश्वनाथजी से कोटि-कोटि प्रार्थना करता हूँ। उनकी श्रद्धा व लगन का जो मैंने अनुभव किया, उसे शब्दों में कह पाने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है।

'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' के अनुशासन में भक्तों के इस समर्पण भाव को बाबा विश्वनाथजी को अर्पण करता हूं। मैं उन भक्तों की इस समर्थ-भावना को काशी विश्वनाथजी के चरणों में समर्पित करते हुए उनके मंगलमय भविष्य की पुनः-पुनः कामना करता हूं।

—दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

विश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम्।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।1।।
वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।2।।
भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं व्याघ्रजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशंकुशाभयवरप्रदशूलपाणिं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।3।।
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं भालेलक्षणानलविशेषिपञ्च वाणाम्।
नागाधिपारचिभासुरकर्णपूरं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।4।।
पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां नागन्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।5।।
तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयमानन्दकन्दमपराजितमप्रदेयम्।
नानात्मकं सकलनिष्कमान्मरूपं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।6।।
रागादिदोपरहितं स्वजनानुरागं वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।7।।
आशां विहाय परिहृत्य परमस्य निन्दां पापे रतं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
हादाय हृत्कमलमध्यतं परेशं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।8।।
वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्या श्रियं विपुल सौख्यमनन्तकीर्तिं सम्प्राप्यदेहविलये लभते च मोक्षम्।।9।।

विश्वनाथाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।10।।